स० मर्शाक

चलें देखने चिड़ियाघर
नन्हे-मुन्ने जानवर

स॰ मार्शाक

चलें देखने चिड़ियाघर
नन्हे-मुन्ने जानवर

राදुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

हाथी

दिये गये हाथी को सैंडल
उसने देखा एक पहनकर,
बोला – छोटा है आकार,
दो से मेरा काम न चलता –
लाओ, लाओ पूरे चार।

जिराफ़

छोटा क़द तो लो यह मान
फूल तोड़ना है आसान,
पर जो ऊंचा पेड़ समान,
उसकी तो मुश्किल में जान।
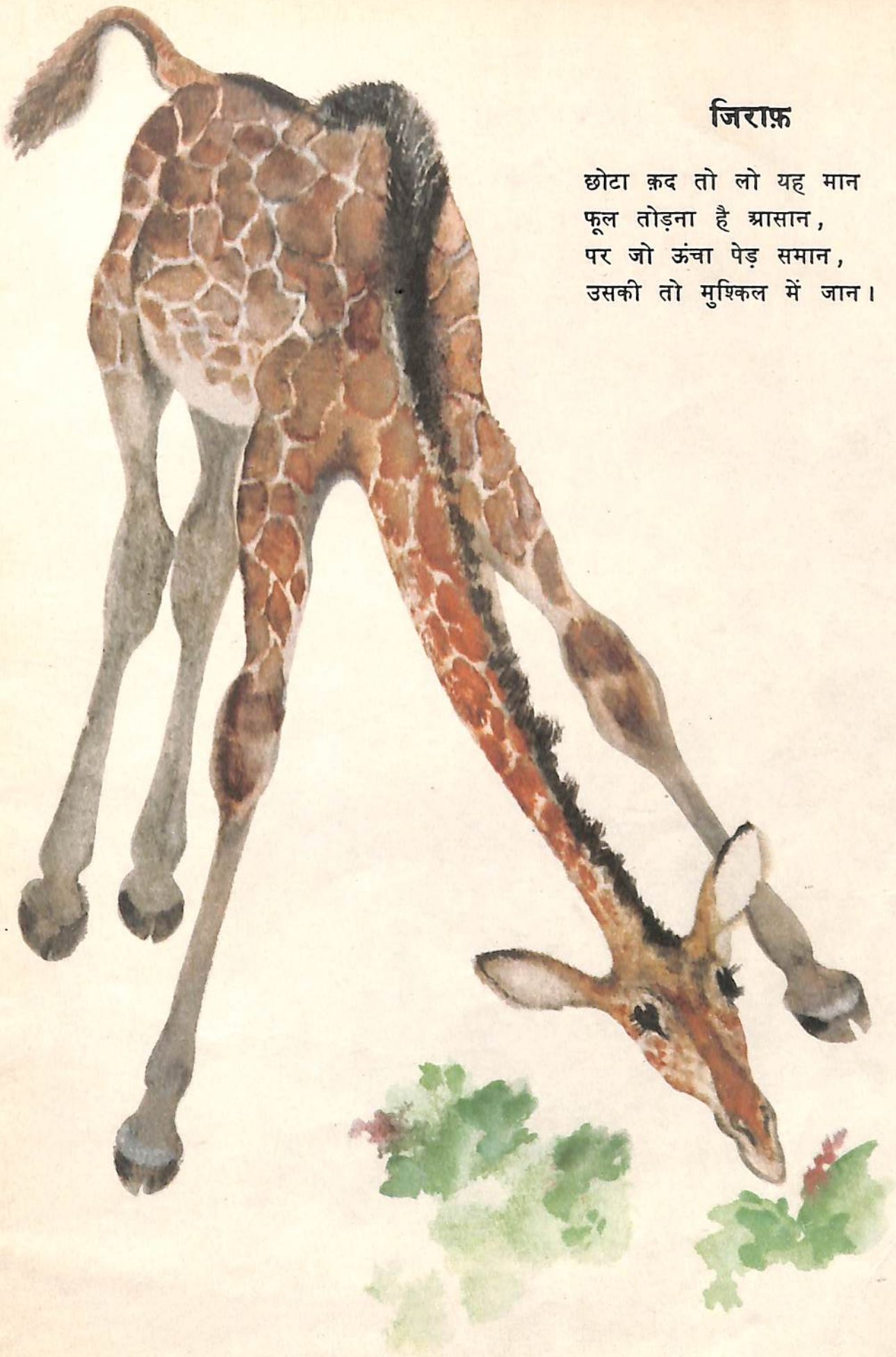
शेर का बच्चा

बहुत निकट मत मेरे आओ,
मैं बिल्ली का नहीं,
शेर का मैं हूं बच्चा–
भूल न जाओ!
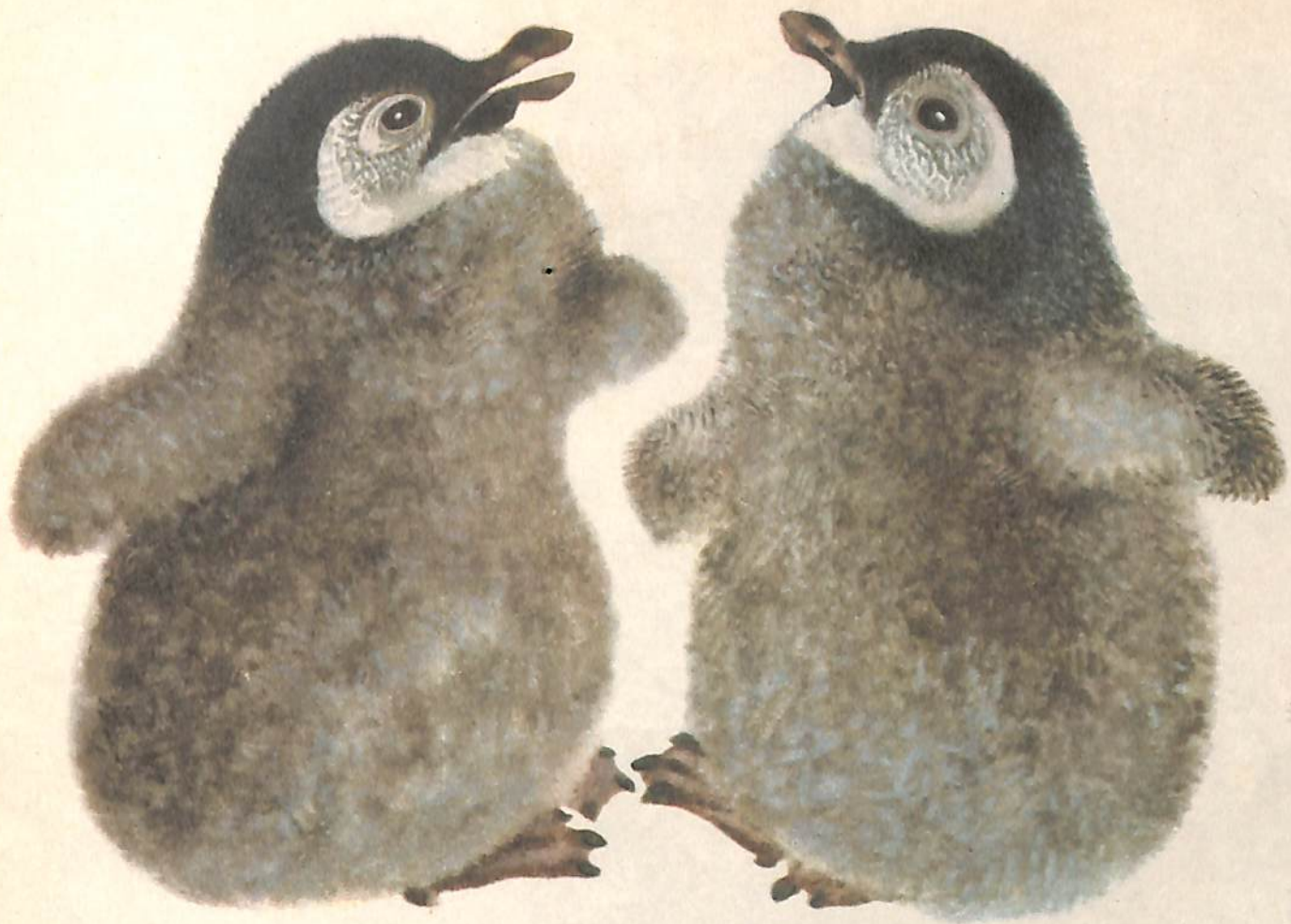
पेंगुइन के बच्चे

हम दो नन्हे-नन्हे भाई, दोनों ही हैं सुन्दर,
कुछ ही देर हुई अंडों से निकले हैं हम बाहर।
किस विहगी ने जन्म दिया, हम अम्मां किसे बुलायें?
कहां भला हम ढूंढ़ें उसको, खोज कहां कर पायें?

यहां नहीं है कोई परिचित, नहीं किसी को जानें,
कौन भला हैं हम ख़ुद दोनों, नहीं तनिक पहचानें।
शुतुरमुर्ग? कलहंस? मोर हम? इतना तो बतलाओ,
हम पेंगुइन, पहचान लिया है। संशय दूर भगाओ!

बन्दर

अफ़्रीका से एक जहाज़ी
वापस जब घर को आया,
छोटा-सा बन्दर का बच्चा
वह अपने संग में लाया।

याद उसे आये अफ़्रीका
जहां कभी था बचपन बीता।
वह मछली का तेल सुबह ही
ठण्डा-ठण्डा है पीता।

ज़ेबरे

ये घोड़े बड़े निराले,
अफ़्रीकी, धारीवाले।
ये चरागाह में जायें,
छिप जायें, नज़र न आयें।

ज़ेबरे यही कहलाते,
कापी की याद दिलाते।
लम्बी-लम्बी रेखायें
सिर से पैरों तक आयें।

हाथी

यह छोटा अफ़्रीकी हाथी,
जल की क्रीड़ा इसे सुहाती।

कान धो लिया, धोया सिर–
टब का पानी गया किधर?
इसको तो नदियां दरकार,
टब क्या पाये इससे पार!

ले जाओ, टब
ले जाओ,
इसे नदी पर
पहुंचाओ!

बबर के बच्चे

नहीं जानते क्या पापा को
लाल रंग का, बबर बड़ा?
पंजे उसके भारी-भारी,
सिर है उसका झबरीला।

बहुत ज़ोर से वह तो गरजे,
गरज दूर तक गूंज उठे।
वह तो मांस सिर्फ़ खाता है,
हमें दूध में मज़े बड़े।

ऊंट

छोटा-सा यह ऊंट बिचारा –
इसे न देते काफ़ी चारा!

बालटियां दो खाईं दिन में,
रही चाह खाने की मन में।

सफ़ेद भालू

हमें मिली है बड़ी तलैया,
तैरें उसमें हम संग भैया।
चौकीदारों की निगरानी,
रहता ताज़ा ठण्डा पानी।

सीधे तैरें, कभी पीठ पर,
यही मज़ा रहता है दिन भर।
रहो ज़रा दायें को, प्यारे,
टकराते हैं पांव तुम्हारे!

शुतुरमुर्ग़ का बच्चा

नन्हा शुतुरमुर्ग़ गर्वीला,
अकड़बाज़ मैं बड़ा सजीला।
जब मैं ग़ुस्से से झल्लाता
गांठ-गंठीली टांग चलाता,
सब को नानी याद दिलाता।
जब डर जाता, दौड़ लगाता,
अपनी गर्दन को फैलाता।
मुझे नहीं है गाना आता
और नहीं मैं तो उड़ पाता।

कंगारू

आस्ट्रेलिया इनका देश,
खेल रहे ये खेल विशेष।
मेंढक-कूद खेल कहलाये,
कंगारू यों दिल बहलाये।

हंस का बच्चा

नन्हे से इस हंस से
पानी क्यों गिरता झर-झर?
अभी ताल से यह निकला है—
इसे तौलिया दो बढ़कर!

एस्किमो कुत्ता

लगी सलाखों पर यह तख़्ती :
"इससे रहना बहुत दूर ही !"
करो न तख़्ती पर विश्वास,
बहुत भला मैं, आओ पास।

क्यों पिंजरे में बंद पड़ा हूं,
मैं तो ख़ुद हैरान बड़ा हूं !

पेंगुइन

बच्चो, कहो, तुम्हें मैं जंचता ?
सच, छोटी-सी बोरी लगता।

सागर में मैंने पोतों से
होड़ कभी की थी बहुतों से।

किन्तु ताल में अब मैं तैरूं,
जैसे-तैसे वक़्त गुज़ारूं।

उल्लू के बच्चे

नज़र ज़रा डालो तो इन पर–
नन्हे-मुन्ने बैठे सटकर।

जब ये जागें,
तब ये खायें,
जब ये खायें,
नींद भगायें।

चिड़ियाघर में गौरैया

गौरैया, री गौरैया खाना खाया कहां पेट भर?
चिड़ियाघर में, जहां जानवर।

पहले खाया बबर जहां पर,
जहां लोमड़ी, गई वहां फिर,

दरियाई घोड़े के पास
पहुंच, बुझाई मैंने प्यास।

हाथी के खाई जा गाजर,
फिर सारस के गेहूं खाकर,

पहुंच गई गेंडे द्वार
भूसी जहां ज़ायकेदार।

झपटा मच्छ कि शामत आई,
बस, मुश्किल से जान बचाई।

चित्रकार: येव्गेनी चारूशिन

अनुवादक: डा० मदनलाल 'मधु'

С. Маршак
ДЕТКИ В КЛЕТКЕ
На языке хинди

S. Marshak
BABIES OF THE ZOO
In Hindi